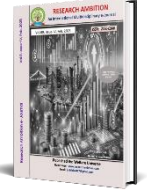




Research Ambition

An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed & Open Access) Journal home page: www.researchambition.com
ISSN: 2456-0146, Vol. 09, Issue-IV, Feb. 2025



नवलगढ़ तहसील के कृषि प्रारूप में बदलाव और भूमि उपयोग पर इसका प्रभाव (Changes in the Agricultural Pattern of Nawalgarh Tehsil and Its Impact on Land Use)

Kuldeep Kumar^a *

Dr. Mahesh Kumar^{**b}

^aPh.D. Scholar (Geography), Shri Khushal Das University, Hanumangarh, Rajasthan (India).

^bResearch Guide, Department of Geography, Shri Khushal Das University, Hanumangarh, Rajasthan (India).

KEYWORDS

नवलगढ़ तहसील के कृषि प्रारूप, शेखावाटी क्षेत्र, अरावली की पहाड़ियाँ, मानसून का आगमन, फसल प्रतिरूप, प्रमुख फसलों का तुलनात्मक उत्पादन, सिंचाई की उपलब्धता और आधुनिक आयाम

ABSTRACT

राजस्थान में कुल 41 जिले हैं उनमें से झुंझुनू भी एक मुख्य और काफी पुराना जिला है। यह राजस्थान के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है, जो शेखावाटी क्षेत्र का एक प्रमुख हिस्सा है। यह राजस्थान के पश्चिम और उत्तर भारत के क्षेत्रों के बीच में है। यह जिला अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। झुंझुनू जिला लगभग 5928 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। यह समुद्र तल से लगभग 323 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। झुंझुनू के कुछ भाग अरावली की पहाड़ियों के पास स्थित हैं, जो यहाँ के भौगोलिक विभिन्नताओं को दर्शाते हैं। जिले का एक हिस्सा थार मरुस्थल के दक्षिण पूर्वी किनारे पर स्थित है, जो यहाँ कि जलवायु को रेगिस्तानी बनाती है।

झुंझुनू जिले में ग्यारह तहसील हैं जिसमें से नवलगढ़ भी एक है। वैसे तो नवलगढ़ अपनी समृद्ध संस्कृति, प्राचीन हवेली और शेखावाटी के प्रसिद्ध भित्तिचित्रों के लिए जाना जाता है। यह तहसील अपने ऐतिहासिक और भौगोलिक विशेषताओं के साथ-साथ अपनी सामाजिक और आर्थिक महत्व के लिए भी प्रसिद्ध है। नवलगढ़ तहसील झुंझुनू जिले के पूर्वी हिस्से में स्थित है। जो लगभग 1300 वर्ग किमी में विस्तृत है। यह अरावली पर्वतमाला के निकट है जो अपने आपको विशिष्ट बनाता है। इसके एक तरफ सीकर जिले की सीमा लगती है तथा झुंझुनू जिले की अन्य तहसीलों से जुड़ा हुआ है। यह तहसील समुद्र तल से लगभग 379 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। नवलगढ़ तहसील में अर्द्ध रेगिस्तानी जलवायु पायी जाती है यहाँ वर्षा की औसत मात्रा 40-50 सेमी है जो खेती के लिए आवश्यक है।

भौतिक दशायें (जलवायु स्थिति, मिट्टी और इसकी विशेषताएं और सिंचाई सुविधाएं)

नवलगढ़ 27°52' उत्तरी अक्षांश तथा 75°17' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है, प्रदेश की राजधानी जयपुर से यह 145 कि.मी. एवं जिला मुख्यालय झुंझुनू से 37 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण पश्चिम में स्थित है, जो इसकी जलवायु और भौतिक दशाओं को स्वतः ही प्रदर्शित करता है। गर्मी

का मौसम लगभग मार्च से जून तक रहता है। गर्मी के मौसम में तापमान बहुत अधिक हो जाता है। दिन के समय तापमान अक्सर 40 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक तक पहुँच जाता है इस दौरान गर्म हवाएं चलती हैं, जिसको लू कहा जाता है। मानसून का आगमन यहाँ जुलाई महीने के अंतिम दिनों या अगस्त महीने की शुरुआत में होता है। उससे पहले यहाँ प्री मानसून वर्षा

Corresponding author

**E-mail: kuldeepkumar6559@gmail.com (Kuldeep Kumar).

DOI: <https://doi.org/10.53724/ambition/v9n4.03>

Received 12th Dec. 2024; Accepted 25th Jan. 2025

Available online 28th February 2025

2456-0146 /© 2025 The Journal. Publisher: Welfare Universe. This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/)

<https://orcid.org/0009-0002-5132-2686>



हो जाती है। मानसून के दौरान कुछ हद तक बारिश होती है, लेकिन वर्षा ऋतु की मात्रा अपेक्षाकृत कम होती है। वर्षा की कमी के कारण "शुष्क कृषि प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। बार-बार जुताई कर पटेला लगाकर नमी को बनाये रखा जाता है, तत्पश्चात फसल बोई जाती है"। वार्षिक औसत वर्षा लगभग 40-50 सेमी तक होती है। मानसून का प्रभाव बहुत अधिक नहीं होता है, परन्तु इस समय तापमान थोड़ा कम हो जाता है और हवा में नमी बढ़ जाती है। सर्दियों में तापमान सामान्यतः मध्यम से लेकर ठंडा होता है। न्यूनतम तापमान लगभग 5-10 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है, और रातों काफी ठंडी हो जाती है। यहाँ की जलवायु शुष्क होने के कारण गर्मियों में हवा की आद्रता कम हो जाती है।

शेखावाटी क्षेत्र में स्थित होने के कारण नवलगढ़ का धरातल अधिकांश रूप से समतल है, लेकिन इसके उत्तरी भाग में छोटे टीले हैं और दक्षिणी भाग में कुछ ऊँचाइयों वाली पहाड़ियां अरावली पर्वतमाला का हिस्सा हैं, जो राजस्थान के मुख्य भौगोलिक रंगभूमि में से एक है तथा यहाँ की प्राकृतिक पहचान है।

फसल प्रतिरूप

इस क्षेत्र के लोगों का कृषि एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है। यहाँ कि जलवायु अर्द्धशुष्क प्रकार की होने के कारण यहाँ की कृषि भी इसी प्रकार की है लेकिन यहाँ के किसान अब परम्परागत खेती के साथ-साथ अब नए तरीके का भी उपयोग कर रहे हैं। इस क्षेत्र में प्रायः सुखायुक्त फसलें और तिलहन उत्पादन पर जोर दिया जाता है। यहाँ तीन मुख्य मौसमों में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती है: रबी, खरीफ और जायद। इन तीनों फसलों का उत्पादन यहाँ के किसानों की आजीविका का मुख्य आधार हैं।

1. रबी कि फसलें आमतौर पर अक्टूबर-नवम्बर में बोई जाती हैं और मार्च अप्रैल में काटी जाती हैं। इस

क्षेत्र में रबी कि फसलों में गेहूँ, जौ, सरसों, मैथी और चना प्रमुख है।

2. खरीफ की फसलें यहाँ आमतौर पर जून-जुलाई में मानसून के समय बोई जाती है और सितम्बर-अक्टूम्बर में काटी जाती हैं। यहाँ खरीफ की मुख्य फसलों में बाजरा, मूंग, उड़द, ग्वार, मूंगफली और मोठ प्रमुख है।
3. जायद की फसल के रूप में यहाँ तरबूज, खरबूज और सब्जियों का उत्पादन किया जाता है। "राजस्थान में मानसून की अनिश्चितता के फलस्वरूप कृषि उपजों के उत्पादन में बढ़ोतरी एवं कमी परिलक्षित होती रहती है"।

आई.सी.ए.आर.आई. और कृषि संस्थानों द्वारा वर्गीकृत मिट्टी

इस क्षेत्र की मिट्टी का अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार वर्गीकरण यू.एस.डी.ए. सोइल टेक्सोनोमी या एफ.ए.ओ. वर्ल्ड रेफरेंस बेस फॉर सोइल रिसोर्सज के द्वारा किया जा सकता है जो मिट्टी को उसकी बनावट, संरचना और गुणों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं। इन मानकों के अनुसार यहाँ की मिट्टी का वर्गीकरण निम्नलिखित से हो सकता है:-

- (1). एरिडोसोल्स- यह मिट्टी शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती है, जहाँ जल कि कमी होती है। नवलगढ़ जैसे शुष्क क्षेत्रों में पाई जाने वाली मिट्टी इसी वर्ग में आती है। कम जैविक पदार्थ, उच्च क्षारीयता और पोषक तत्वों की कमी पाई जाती है। इस मिट्टी में सूखा सहने वाली फसलें जैसे बाजरा, जौ और मूंगफली जैसी फसलें बोई जाती है।
- (2). एंटीसोल्स- यह मिट्टी नवगठित और अविकसित होती है, जिसमें कोई स्पष्ट क्षितिज नहीं होती है। इसमें ढीली संरचना और पोषक तत्वों की कमी होती हैं। यह मिट्टी कृषि के लिए अधिक उपयुक्त नहीं

होती, लेकिन कुछ शुष्क क्षेत्र कि फसलें उगाई जा सकती हैं।

भूमि उपयोग

भूमि उपयोग का मतलब है कि विभिन्न उद्देश्यों के लिए पृथ्वी के विभिन्न भागों का उपयोग करने की प्रक्रिया को भूमि उपयोग कहा जाता है। यह कृषि व्यवसाय विकास, वानिकी, उद्योगिक क्षेत्रों, सड़कों और रेल मार्गों के निर्माण आदि से सम्बंधित है।

नवलगढ़ क्षेत्र का भूमि उपयोग 2015-16 और 2022-23 के अंतर्गत निम्नानुसार रहा है:-

मद	इकाई	2015-16 के अनुसार	2022-23 के अनुसार
कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	हैक्टर	68545	68545
वन क्षेत्र	हैक्टर	2195	2195
कृषि अयोग्य भूमि	हैक्टर	3763	3520
स्थाई चारागाह एवं अन्य गौचरभूमि	हैक्टर	3682	3682
विविध वृक्ष फसलें तथा वृक्ष कुंज बोये गए क्षेत्रफल में सम्मिलित नहीं है	हैक्टर	14	2
कृषि अयोग्य भूमि, पड़त बंजर सहीत	हैक्टर	10021	14143
वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल	हैक्टर	48870	45003
एक बार से अधिक बार बोया गया क्षेत्रफल	हैक्टर	31724	34155
सकल बोया गया क्षेत्रफल	हैक्टर	80594	79158

स्रोत- आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, नवलगढ़ (झुंझुनू) के द्वारा प्रकाशित ब्लॉक सांख्यिकीय रुपरेखा 2016 और 2023

प्रमुख फसलों का तुलनात्मक उत्पादन

नवलगढ़ में फसलें मानसूनी बारिश और सिंचाई कि उपलब्धता के साथ-साथ मिट्टी के आधार पर निर्भर करती हैं। यहाँ कि रेतीली और दोमट मिट्टी के आधार

पर फसल चयन किया जाता है। रेतीली मिट्टी में नमी को बनाए रखना कठिन होता है इसलिए सूखा सहने वाली फसलें यहाँ अधिक उगाई जाती हैं। बाजरा, ग्वार और सरसों जैसी फसलें इस प्रकार कि मिट्टी में अच्छी पैदावार देती हैं। दोमट मिट्टी में उर्वरता और जलधारण क्षमता अधिक होने के कारण गेहूँ, जौ और दालों कि खेती करना लाभप्रद होता है। इसके अतिरिक्त क्षेत्र में पानी उपलब्धता भी फसल के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जहाँ अधिक जल की उपलब्धता होगी वहाँ पर गेहूँ और सब्जियां आदि उगाई जाती है। 2015-16 से यहाँ का यहाँ परम्परागत रूप से निम्न फसलें उगाई जाती हैं:-

खरीफ फसलें- खरीफ फसलों को मानसून के मौसम में उगाया जाता है। इस समय जलवायु गर्म होती है और बारिश होने कारण फसलें बढ़ने के लिए उपयुक्त वातावरण प्राप्त करती है।

बाजरा- यह क्षेत्र कि प्रमुख खरीफ फसल है जो कम पानी कि आवश्यकता में भी उगाई जा सकती है। बाजरे की खेती रेतीली मिट्टी में बेहतर होती है।

ग्वार- यह एक सूखा प्रतिरोधी फसल है जिसे कम पानी वाले क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

मूंगफली- नवलगढ़ के दोमट और रेतीली मिट्टी वाले क्षेत्रों में मूंगफली कि खेती अच्छी होती है।

ज्वार- यह भी एक मुख्य खरीफ फसल है जिसे अक्सर बाजरे के साथ उगाया जाता है।

रबी फसलें- रबी फसलें ठंडे मौसम में उगाई जाती हैं और इन्हें सिंचाई कि आवश्यकता होती है। ठंडा और शुष्क मौसम रबी फसलों के लिए बेहतर माना जाता है।

गेहूँ- इस क्षेत्र में गेहूँ की खेती की जाती है। दोमट और जलोढ़ मिट्टी में इसकी अच्छी पैदावार होती है।

सरसों- सरसों कि खेती नवलगढ़ में रबी मौसम में बड़े पैमाने पर कि जाती है। यह कम पानी की आवश्यकता

वाली फसल है।

जौ— यह फसल भी रबी के मौसम में उगाई जाती है।

इस क्षेत्र में वर्ष 2015-16 और 2022-23 में तुलनात्मक

रूप से फसलों का उत्पादन निम्न प्रकार से रहा है:-

फसल	वर्ष 2015-16 के अनुसार फसलों का		फसल कटने के समय भाव (₹ प्रति क्विंटल)	वर्ष 2022-23 के अनुसार फसलों का		फसल कटने के समय भाव (₹ प्रति क्विंटल)
	बोया गया क्षेत्र (हे.में)	उत्पादन (मै.टन में)		बोया गया क्षेत्र (हे.में)	उत्पादन (मै. टन में)	
गेहूँ	10200	30680	1400	13700	17506	2200
जौ	2200	2854	1150	1480	3116	1700
चना	11900	9618	3175	14900	3248	4700
सरसों	5800	3252	3100	5550	3781	5000
बाजरा	24490	5491	1250	25400	35841	1900
ग्वार	13080	598	4750	11050	9199	4750
मूंग	480	1213	4800	569	1651	6500
चवला	390	2581	4810	260	1586	6500
तिल	15	3.5	6700	14	2	9500
मूंगफली	10	598	3600	90	6038	6370
मैथी	30	410	4450	22	336	6400

स्रोत— आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, नवलगढ़ (झुंझुनू) के द्वारा प्रकाशित ब्लॉक सांख्यिकीय रुपरेखा 2016 और 2023।

सिंचाई की उपलब्धता और आधुनिक आयाम

नवलगढ़ क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं की स्थिति मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर रहती है, क्योंकि यह एक शुष्क क्षेत्र है। नवलगढ़ राजस्थान के शेखावाटी मैदान के अन्तर्गत आता है "यह उपप्रदेश मुख्य रूप से कृषि अर्थव्यवस्था प्रधान है, जो मौलिक रूप से कुओं तथा नलकूपों की सिंचाई पर निर्भर है"। यहाँ के किसान पारम्परिक और आधुनिक दोनों प्रकार कि सिंचाई तकनीकों का उपयोग करते है जो निम्न प्रकार है:

(1). कुओं और नलकूपों के माध्यम से सिंचाई— नवलगढ़

में कई किसान अपने खेतों की सिंचाई के लिए कुओं

और नलकूपों का इस्तेमाल करते हैं। इस क्षेत्र में भूजलस्रोत महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन भूजल स्तर के कम होने के कारण इसकी चुनौती बढ़ रही है।

(2). तालाब और जोहड़— कुछ स्थानों पर वर्षा के पानी

को संग्रहित करने के लिए तालाब और जोहड़ बनाए गए हैं। ये जल संरक्षण के अच्छे साधन होते हैं और यह सूखे के समय में सिंचाई के लिए उपयोगी हैं।

(3). वाटर हार्वेस्टिंग— हाल के वर्षों में जल संरक्षण और

भूजल पुनर्भरण की दिशा में लोगों में जागरूकता बढ़ी है, जिससे कई जगहों पर वाटर हार्वेस्टिंग तकनीकों को अपनाया जा रहा है।

(4). राज्य सरकार की सिंचाई योजनाएँ— सरकार द्वारा

समय-समय पर किसानों के लिए विभिन्न सिंचाई योजनाएँ चलाई जाती हैं जिसमें ड्रिप इरिगेशन और स्प्रिंकलर जैसी तकनीकों को बढ़ावा दिया जाता है ताकि जल का कुशलता से उपयोग हो सके।

सिंचाई के मामले में इस क्षेत्र में चुनौतीपूर्ण परिस्थितियाँ हैं लेकिन पारम्परिक और आधुनिक तरीकों का मिश्रण किसानों को अपनी फसल को बचाने और उपज को बनाए रखने में मदद करता है।

बिजली और अन्य पॉवर आपूर्ति के साधन

इस क्षेत्र में बिजली और पॉवर आपूर्ति कि वर्तमान स्थिति राजस्थान राज्य के पॉवर ढांचे का हिस्सा है, जिसमें कई सुधार किए हैं। पूरे राज्य में ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति में वृद्धि हुई है, और औसतन 21.9 घंटे प्रतिदिन बिजली की उपलब्धता है। इसके साथ ही नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे— सौर उर्जा, पवन ऊर्जा का भी उपयोग बढ़ रहा है। राजस्थान सौर ऊर्जा उत्पादन में अग्रणी है, और इस क्षेत्र में कई सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। राज्य और केंद्र सरकार द्वारा उच्च क्षमता वाली लाइनों और ट्रांसफार्मरों के निर्माण में बड़े निवेश किए गए हैं, जिससे बिजली आपूर्ति अधिक

विश्वसनीय और नियमित हो गई है। नवलगढ़ क्षेत्र में भी इन सुधारों का लाभ मिल रहा है, और सौर ऊर्जा जैसे नवीकरणीय स्रोत यहाँ बिजली आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

फसलों का बदलता प्रारूप

एम.एस. स्वामीनाथन के अनुसार फसल प्रारूप उस व्यवस्थापन को दर्शाता है जो किसान अपने क्षेत्र में भूमि के प्रयोग और उसमें उगाई जाने वाली फसलों के लिए अपनाता है, और वह उस स्थल की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, मिट्टी और पानी की उपलब्धता पर आधारित होता है। फसल प्रारूप में विभिन्न पर्यावरणिय और आर्थिक कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो किसानों के फसलों के चयन और उनके व्यवस्थापन को प्रभावित करते हैं, लेकिन वर्तमान समय में पिछले 7 से 8 वर्षों में फसलों का प्रारूप काफी बदल गया है। इस बदलाव का मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन, जल की कमी और आधुनिक कृषि तकनीकों का आगमन है। वर्तमान में नवलगढ़ क्षेत्र में फसल के बदलते प्रारूप को निम्नलिखित बिन्दुओं में देखा जा सकता है:-

1. **पारम्परिक फसलों में गिरावट**— पहले नवलगढ़ क्षेत्र में मुख्य रूप से बाजरा, ज्वार, चना, सरसों और मूंग जैसी परम्परागत फसलें उगाई जाती थी लेकिन अब जलवायु, जल संकट, प्रति एकड़ कम पैदावार और इन फसलों का किसान को लागत के अनुसार मूल्य नहीं मिलने के कारण इनकी खेती में कमी आई है। इन फसलों के लिए जो परम्परागत खेती प्रणाली थी वह अभी धीरे-धीरे कम होती जा रही है।
2. **सरसों और गेहूँ की बढ़ती खेती**— वर्तमान समय में इस क्षेत्र में सरसों और गेहूँ की खेती ने प्रमुखता हासिल की है। सरसों कम पानी में उगाई जा सकती है, इसलिए यह किसानों के बीच अधिक लोकप्रिय हो

गई है साथ ही गेहूँ की खेती के लिए नई तकनीकों और सिंचाई साधनों का उपयोग किया जा रहा है।

3. **सब्जियों और बागवानी फसलों की और रुझान**— इस क्षेत्र में अब सब्जियों और बागवानी फसलों जैसे टमाटर, प्याज और मिर्च की खेती का चलन बढ़ रहा है। ड्रिप सिंचाई और पॉलीहाउस तकनीकों के उपयोग से यह खेती अधिक लाभकारी साबित हो रही है।
4. **अंतर्राष्ट्रीय बाजार की मांग का प्रभाव**— ग्लोबल बाजार में बेहतर मूल्य मिलने के कारण यहाँ के कुछ हिस्सों में किन्नु, अनार, मौसमी जैसी बागवानी फसलों की खेती भी प्रारंभ हो गई है।
5. **जल संकट के चलते खेती के तरीके में बदलाव**— जल की कमी के कारण कई किसान अब परम्परिक सिंचाई पद्धतियों की बजाय ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं। इससे पानी की बचत के साथ साथ उपज में भी वृद्धि हो रही है।
6. **कृषि विविधिकरण**— किसानों ने अब कृषि विविधिकरण की ओर रुख किया है। वे अब विभिन्न प्रकार की फसलें उगा रहे हैं। जिससे जोखिम कम हो और अधिक आर्थिक लाभ मिल सके।

इन सब के आधार हम कह सकते हैं की नवलगढ़ क्षेत्र में फसलों का बदलता प्रारूप जलवायु, जल संकट और आधुनिक कृषि तकनीकों से प्रभावित हो रहा है।

फसल संयोजन

वर्तमान में इस क्षेत्र के किसानों के द्वारा निम्न प्रकार से फसल संयोजन किया जा रहा है:-

- खरीफ फसलें (बाजरा) + बागवानी (नकदी फसल)
- रबी फसलें (गेहूँ) + बागवानी (नकदी फसल)

बागवानी एवं फसल संयोजन:-

जब इस क्षेत्र के किसानों के द्वारा अपनाई जा रही

संयुक्त कृषि पद्धति का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हैं तो देखते हैं कि यहाँ फसल संयोजन के पैटर्न में मुख्य फसलों के साथ बागवानी का ही संक्रमण क्यों किया जाता है तथा यह क्यों और कैसे फायदेमंद है ?

व्यावसायिक फसलों और खाद्य पदार्थों की टिकाऊ तरीके से खेती और विपणन करने की कला और तकनीक को बागवानी कहा जाता है। भारत में रबी और खरीफ मौसम की मानक फसलों के साथ-साथ बागवानी की जाती है। राजस्थान, जो उत्तरी-पश्चिमी भारत के अर्द्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्र में स्थित है। यहाँ की बागवानी फसलें किसानों को वित्तीय और निवेश सहायता प्रदान करती हैं। राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में विशेष रूप से झुंझुनू जिले की नवलगढ़ तहसील में किसानों ने आंशिक रूप से वित्तीय संकट के कारण और आंशिक रूप से तहसील की शुष्क प्राकृतिक स्थलाकृति के कारण वाणिज्यिक फसलों का विकास किया है और उनमें जबरदस्त रुचि दिखाई है। वे न केवल बागवानी फसलों को प्राथमिकता दे रहे हैं बल्कि फसल उत्पादन में और सुधार लाने के लिए आधुनिक कृषि तकनीकों को भी अपना रहे हैं। तहसील में प्रमुख बागवानी फसलें और पैटर्न फसलों का संयोजन जैसे कि तिल, मेथी, मूंगफली, लोबिया आदि पर शोधकर्ताओं को ध्यान देने की आवश्यकता है। इन फसलों को मुख्य धारा की फसलों जैसे गेहूँ, बाजरा, सरसों, ग्वार आदि के साथ-साथ बोया जाता है। इसके अलावा उपरोक्त बागवानी फसलों के सूक्ष्म अध्ययन से मुख्य फसलों से नकदी/वाणिज्यिक फसलों की ओर दिलचस्प बदलाव का पता चलता है।

गेहूँ उत्पादन एवं बागवानी

(1). फसल पैटर्न : (गेहूँ – चना – मैथी)– गेहूँ को उत्तरी भारत के साथ-साथ राजस्थान की प्रमुख और मुख्य फसल माना जाता है। वर्ष 2015–16 (30,680 मीट्रिक टन) और 2022–23 (17,506 मीट्रिक टन) के आंकड़ों

की तुलना करने पर प्रति मीट्रिक टन उत्पादन में भारी गिरावट देखी है। इसके अलावा एक और महत्वपूर्ण बात यह सामने आई है कि इस क्षेत्र में पिछले वर्षों की तुलना में फसलों की बुआई में भी अपेक्षाकृत धीमी प्रगति देखी जा रही है। वर्ष 2015–16 में कुल क्षेत्रफल 10,200 हेक्टेयर था, जबकि 7 वर्षों के बाद यह केवल 3500 हेक्टेयर की मामूली प्रगति दर्शाता है और 13700 हेक्टेयर तक पहुंचा है। बागवानी फसल जो गेहूँ की पूरक है वह मेथी है और इसका उत्पादन 2015–16 में 4450 मीट्रिक टन से बढ़कर 2022–23 में 6400 मीट्रिक टन हो गया है।

बाजरा उत्पादन एवं बागवानी

(2). फसल पैटर्न: (बाजरा– ग्वार– लोबिया)– राजस्थान की प्रमुख फसल बाजरा को निश्चित रूप से मुख्य आहार माना जाता है। 2015–16 में 24490 हेक्टेयर और 2022–23 में 25400 हेक्टेयर में बोया गया है, लेकिन फसल के उत्पादन में 2015–16 में केवल 5491 मै. टन का उत्पादन हुआ और वर्ष 2022–23 में 35841 मै. टन की भारी वृद्धि हुई है। नवलगढ़ तहसील में बाजरा के साथ-साथ खरीफ मौसम की फसल लोबिया (चंवला) बोया जाता है। तिल का विक्रय मूल्य वर्ष 2015–16 के बजे वर्ष 2022–23 में ₹4810/– क्विंटल से बढ़कर ₹6500/– क्विंटल रहा है। महत्वपूर्ण बात यह है कि लोबिया के उत्पादन और इसकी कीमत दोनों में भारी वृद्धि देखी गई है।

जौ उत्पादन एवं बागवानी

(3). फसल पैटर्न: (जौ–मसूर–मूंगफली)– जौ राजस्थान की एक और महत्वपूर्ण फसल है और नवलगढ़ तहसील में इसके उत्पादन में कमी देखी जा रही है

और किसानों के बीच इसकी रुचि कम हो रही है और इस मंदी का मूल कारण तहसील के किसानों के बीच मूंगफली की बढ़ती लोकप्रियता है। जौ के उत्पादन क्षेत्र में भी बहुत ही कम वृद्धि देखी गई है। उदाहरण के लिए वर्ष 2015-16 में यह 2200 हेक्टेयर था जो वर्ष 2022-23 में घटकर 1480 हेक्टेयर ही रह गया है। मूंगफली जो किसानों के बीच बेहद लोकप्रिय हो रही है, इसका मूल्य वर्ष 2015-16 में 3600 रु. प्रति क्विंटल था जो अभी वर्ष 2022-23 में बढ़कर 6370 रु. प्रति क्विंटल तक पहुंच गया है।

सरसों उत्पादन एवं बागवानी

(4). फसल पैटर्न: (सरसों-हरा चना-अनार)- नवलगढ़ तहसील में सरसों प्रमुख रबी फसल में से एक है, जिसका उपयोग खाद्य और उपभोग दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता है। यद्यपि प्रति हेक्टेयर उत्पादन और प्रति क्विंटल कीमत में काफी वृद्धि हुई है, लेकिन प्रति हेक्टेयर खेती (बुवाई) 2015-16 में 5800 हेक्टेयर से थोड़ी कम होकर 2022-23 में 5550 हेक्टेयर रह गई है। इसका विकल्प बागवानी फसल है।

नवलगढ़ तहसील में वर्ष 2023 में फल रोपण की स्थिति

1. **बेर**- यहाँ बेर की खेती 3.9 हेक्टेयर में होती है। पेड़ों की कुल संख्या 108 है इनका उत्पादन 9720 किलोग्राम/97.20 क्विंटल है। प्रत्येक पेड़ द्वारा कवर की गई जगह 6.6 वर्ग मीटर है।
2. **किन्नु**- इसकी लोकप्रियता हाल के वर्ष में तेजी से बढ़ रही है। इसको अभी तक 7.3 हेक्टेयर में 205 पेड़ लगाये गए हैं, इनका उत्पादन 30750 किलोग्राम/307 क्विंटल है। प्रत्येक पेड़ द्वारा कवर की गई जगह 6.6 वर्ग मीटर है।
3. **निम्बू**- यहाँ निम्बू काफी लोकप्रिय है। जो 10.90

हेक्टेयर में बोया गया है तथा इनके पेड़ों की कुल संख्या 305 है। उत्पादन 45750 किलोग्राम/457.50 क्विंटल है।

4. **मौसमी**- मौसमी का 50.85 हेक्टेयर में लगाया गया है इनमें पेड़ों की संख्या 1410 है। तथा उत्पादन 211500 किग्रा/2115क्विंटल रहा है।
5. **अनार**- हाल ही में नवलगढ़ तहसील के किसानों के बीच अनार का उत्पादन लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। कुल 45 पेड़ हैं। उत्पादन 4050 किग्रा/40.50 क्विंटल रहा है।
6. **बेलपत्र**- यह अभी तक 9.0 हेक्टेयर में 25 पेड़ लगाये गए हैं। एक पेड़ से 5 क्विंटल फल निकलता है तथा कुल उत्पादन 12500/125 क्विंटल हैं।
7. **आम**- आम का उत्पादन किसानों द्वारा की गई एक हालिया पहल है इसका अभी तक .2 हेक्टेयर में कुल 06 पेड़ हैं।
8. **खजूर**- इसका अभी तक 1.4 हेक्टेयर में 22 पेड़ हैं तथा उत्पादन 1760 किग्रा/17.60 क्विंटल हुआ है।

अध्ययन क्षेत्र के किसानों के बीच बागवानी की लोकप्रियता बढ़ रही है। इसी कारण इस क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में किसानों ने अपनी कृषि पद्धति में बागवानी को बढ़ावा दिया है। और उन्होंने इसकी अच्छी उत्पादकता भी प्राप्त की है। इस विकास के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं, जिनका उल्लेख करना आवश्यक है। सबसे पहले मुख्य फसलें जैसे सरसों, गेहूँ, चना आदि किसानों के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी साबित नहीं हुई हैं, इसलिए कई लोगों ने अपने व्यवसाय के लिए बागवानी और नकदी फसलों की ओर भी रुख किया है। दूसरा कारण यह है कि हाल ही में राजस्थान और भारत सरकार ने राजस्थान में बागवानी प्रथा को बढ़ावा देने के लिए कई सरकारी योजनाएं शुरू की हैं और नकदी फसलों पर उल्लेखनीय सब्सिडी प्रदान की है। जिसके

कारण किसानों का बागवानी और नगदी फसल की और अधिक झुकाव हुआ है। तीसरा कारण बागवानी को बढ़ावा देने और खेती करने से मिट्टी की उत्पादकता और गुणवत्ता में वृद्धि हुई है, आमतौर पर राजस्थान के इस क्षेत्र में रेतीली मिट्टी है जिसकी उत्पादन क्षमता कम है लेकिन नकदी फसलें बोने से मिट्टी की उत्पादकता में काफी हद तक सुधार हुआ है। चौथा कारण यह है कि बागवानी फसलें मुख्य फसलों की तुलना में अधिक पर्यावरण-अनुकूल हैं, इसके साथ साथ यह भी ध्यान में रखना है कि मुख्य फसलों को सिंचाई के दौरान अधिक पानी की आवश्यकता होती है। पांचवा कारण नकदी फसलें अधिक उत्पादन देती हैं और उत्पादन में मुख्य फसलों की तुलना में फसल की क्षति और विफलता इतनी अधिक नहीं होती है। तथा अन्तिम कारण है कि बागवानी फसलों के लिए बाजार की उपलब्धता और कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं। इसलिए किसान को आसानी से फसल की कीमत मिल जाती है।

निष्कर्ष—

राजस्थान शुष्क और अर्द्ध-शुष्क स्थलाकृति वाला एक विशाल भू-भाग वाला राज्य है, जिसके कारण कृषि और फसल उत्पादन को बनाए रखना और उसे सतत् और समृद्ध करना काफी कठिन हो गया है। लेकिन हाल ही में कृषि विज्ञान और अभ्यास में प्रगति के कारण भारी बदलाव आया है, किसान मुख्य फसल और बागवानी

फसलों के साथ अलग-अलग फसल पैटर्न का अभ्यास कर रहे हैं। बागवानी के साथ यह फसल संयोजन शेखावाटी क्षेत्र की नवलगढ़ तहसील में काफी लोकप्रिय हो रहा है। सिंचाई और ईंधन पर सरकारी सब्सिडी की सहायता से किसानों ने कृषि में अद्भुत काम और प्रगति की है। CAZARI जैसे सरकारी कृषि संस्थान ने किसानों को उनकी फसल उत्पादन में सुधार करने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी सहायता प्रदान की है। बागवानी के अभ्यास के कारण किसानों ने अपने उत्पादन में सुधार किया है जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक रूप से उनकी कमाई में सुधार हुआ है जो किसानों को कृषि में निवेश करने और अपने कृषि अभ्यास में नई तकनीक को तैनात करने के लिए प्रोत्साहित करता है। अंत में यह कहा जा सकता है कि यदि उचित फसल संयोजन के साथ सही बागवानी फसलों का उपयोग किया जाए तो राजस्थान जैसा शुष्क राज्य भी कृषि प्रगति कर सकता है।

सन्दर्भ सूची—

1. आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, नवलगढ़ (झुंझुनू) के द्वारा प्रकाशित ब्लॉक सांख्यिकीय रुपरेखा 2016।
2. आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, नवलगढ़ (झुंझुनू) के द्वारा प्रकाशित ब्लॉक सांख्यिकीय रुपरेखा 2023।
3. माजिद हुसैन— कृषि भूगोल।
4. सेंट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड— जल संसाधन मंत्रालय भारत सरकार।
5. एम.डी. सिंह एवं चित्रा राव (2015) राजस्थान: भूगोल, अर्थव्यवस्था एवं राजव्यवस्था, राजपेनोरमा वॉल्यूम-1 अष्टम प्रकाशन, जयपुर।
